

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 11, इब्रानियों 12: 4-29: प्रशिक्षण में नागरिक

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

रूपरेखा बनाने और प्राचीन पाठ को कुछ हद तक प्रबंधनीय सामग्री के खंडों में तोड़ने की खोज में, हम उस चीज़ को अलग-अलग कर देते हैं जिसे एक प्राचीन लेखक ने एक साथ जोड़ने की कोशिश की है। इस प्रकार, इब्रानियों 12.4 में एक नया खंड शुरू करना निश्चित रूप से कृत्रिम है; यहाँ मेरी अपनी इच्छा का परिणाम यह है कि मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि 11.40 और 12.1 के बीच उपदेशक और विद्वान जो विशिष्ट विराम बनाते हैं, वह और भी अधिक समस्याग्रस्त है। इब्रानियों 12.4 स्वाभाविक रूप से एथलेटिक कल्पना को जारी रखता है जिसे लेखक ने अध्याय 12 के श्लोक 1 से 3 में तैयार करना शुरू किया और जल्दी से 12.5 से 11 में प्रशिक्षण या पैडिया, शिक्षा के असंबद्ध विषय पर आगे बढ़ता है, जिसका एक बड़ा घटक प्राचीन दुनिया में एथलेटिक प्रशिक्षण शामिल था।

पैडिया, रचनात्मक शिक्षा या प्रशिक्षण का यह लेंस, दूसरा ढांचा है जो लेखक अपने अभिभाषकों को उनके पड़ोसी की शत्रुता के अनुभव को देखने के लिए देता है। यह लेखक को आगे बढ़ने के तरीके के बारे में कुछ विशिष्ट निर्देश देने के लिए प्रेरित करता है और 12:12 से 17 में खतरनाक जाल से बचने के बारे में कुछ निर्देश भी देता है, जो सभी को प्रतियोगिता और रचनात्मक अनुशासन के लेंस के माध्यम से उनकी स्थिति को देखने के तार्किक परिणाम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन कार्यों को अपनाने के लिए एक सहायक तर्क के रूप में, लेखक श्लोक 18 से 24 में एक तरह का सारांशात्मक अंतर प्रस्तुत करता है जिस तरह से पहले भगवान से संपर्क किया गया था, अर्थात् गंभीर वर्जनाओं के बीच और बहुत डर और घबराहट के साथ, भगवान के शाश्वत शहर के लिए उत्सव और आत्मविश्वास से भरे दृष्टिकोण के साथ, जिसके साथ उन्होंने अभिभाषकों को विशेषाधिकार दिया है।

12:25 पर, लेखक अंतिम छोटी से बड़ी चेतावनी देते हुए उनसे आग्रह करता है कि वे स्वर्ग से उनसे बात करने वाले से दूर न जाएँ। इसके बाद, 26 से 29 वें श्लोक में लेखक की युगांतिक अपेक्षा का एक जोरदार बयान आता है, दृश्यमान अस्थिर क्षेत्र, स्वर्ग और पृथ्वी को हटाना जो इस भौतिक सृष्टि का हिस्सा हैं, और विश्वासियों का स्थायी अस्थिर राज्य में स्वागत। यह सब हागै, अध्याय 2, श्लोक 6 की एक विशिष्ट व्याख्या द्वारा समर्थित है। आने वाले वादा किए गए अच्छे के प्रकाश में, इस अस्थिर राज्य का स्वागत, एकमात्र उचित प्रतिक्रिया, लेखक के अनुसार, कृतज्ञता दिखाना है, जैसा कि वह श्लोक 28 में प्रोत्साहित करता है।

कृतज्ञता की यह प्रतिक्रिया वह है जिसे वह अध्याय 13, श्लोक 1 से 21 के माध्यम से व्यावहारिक और स्पष्ट शब्दों में स्पष्ट करेगा। यदि संबोधित व्यक्ति कृतज्ञता की प्रतिक्रिया बनाए रखते हैं, तो वे ईश्वर के प्रति उचित श्रद्धा दिखा रहे हैं। लेखक उन्हें श्लोक 29 में याद दिलाता है कि यह वास्तव में एकमात्र बुद्धिमानी भरा कार्य है क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करने वाली आग है।

और इस प्रकार, अध्याय 12 के समापन के साथ, लेखक उस खतरे के संकेत पर लौटता है जो पूरे उपदेश में चला आ रहा है, संबोधित करने वालों से आग्रह करता है कि वे कृतज्ञता के प्रदर्शन, वफादारी और आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया से कम न पड़ें जो इस शक्तिशाली दिव्य संरक्षक के लिए है। 12, श्लोक 4 से 11 में, लेखक श्रोताओं को अपनी स्थिति की चुनौतियों को ईश्वर के प्रारंभिक अनुशासन के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारे पास पहले से ही एक अवसर था, एक परिचयात्मक खंड में, लेखक की शिक्षा के अपने स्तर की खोज के संबंध में इस अंश को देखने के लिए क्योंकि यह अंश तर्क के एक प्रसिद्ध पैटर्न को प्रदर्शित करता है, जो आमतौर पर हाई स्कूल स्तर पर सीखा जाता है, जैसा कि बयानबाजी निर्देश के रूप में होता है।

इस खंड में, हम लेखक के पादरी लक्ष्यों में अंश के योगदान पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे, विशेष रूप से श्रोताओं की उनके अनुभवों की धारणा को आकार देने पर। वह 12:4 में रचनात्मक अनुशासन की इस छवि की ओर ले जाता है, एथलेटिक इमेजरी को जारी रखते हुए जिसके साथ उसने 12:1 से 3 में उपदेश के इस खंड को खोला था। पाप के खिलाफ अपने मुकाबले में प्रतिस्पर्धा करते हुए, आपने अभी तक खून की हद तक लड़ाई नहीं लड़ी है। लेखक विश्वास के इस ट्रायथलॉन में एक और घटना की ओर बढ़ता है, छंद 1 से 3 की पैदल दौड़ से लेकर आमने-सामने की लड़ाई के किसी रूप तक।

शायद उनके मन में मुक्केबाजी या कुश्ती के बजाय पैन्क्रेटियम नामक बिना किसी रोक-टोक वाली मुकाबला प्रतियोगिता थी, जिसमें खून बहने की प्रवृत्ति नहीं थी। यह सिर्फ इस बात का संकेत नहीं है कि इस हद तक संबोधित करने वालों ने अपने ईसाई विश्वासों के लिए कितना कष्ट सहा है, या इससे भी ज्यादा, उन्होंने कितना कष्ट नहीं सहा है। यह उन श्रोताओं को शर्मिंदा करने का एक प्रयास है, जिनकी मसीह के प्रति वफादारी के लिए पीड़ा अभी तक मसीह द्वारा उनके लिए की गई पीड़ा के कहीं भी करीब नहीं आई है।

उनमें से कोई भी पहले से ही बेहोश होने या हार मानने के करीब कैसे हो सकता है? श्रोताओं को यह याद दिलाना कि उनका मुक्केबाजी मैच पाप के खिलाफ है, बयानबाजी की दृष्टि से भी रणनीतिक है। उनके पड़ोसी का उन पर दबाव सौम्य या नेकनीयत नहीं है। वे पाप की शक्ति का प्रकटीकरण हैं, जो उन पर अपना शिकंजा कसने या उन्हें अधीन करने की कोशिश कर रहे हैं।

ईसाई समूह से जुड़ाव से अलग होकर गैर-विश्वासियों के साथ शांति स्थापित करना पाप के खिलाफ इस लड़ाई में शर्मनाक तरीके से हार मान लेना है। लेखक ने एक आम बयानबाजी के उपकरण, एथलेटिक इमेजरी का इस्तेमाल किया है, जो एक अलोकप्रिय कार्रवाई में दृढ़ता को सुविधाजनक बनाने के लिए है। अब वह एक दूसरे ऐसे उपकरण की ओर रुख करता है।

इसलिए, हम पद 5 से 11 में पढ़ते हैं कि तुम भी उस उपदेश को भूल गए हो जो तुम्हें पुत्र और पुत्रियों के रूप में बोलता है। हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलके में न लेना, और न उसके द्वारा डांटे जाने पर उदास होना। क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है, उसी को ताड़ना करता है, और जिस किसी पुत्र को ग्रहण करता है, उस को डांटता भी है।

इसलिए शिक्षा के लिए धीरज रखो। परमेश्वर तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा अपने बेटे-बेटियों के साथ करता है। ऐसा कौन बेटा या बेटा है जिसे पिता अनुशासन न दे? पर यदि तुम अनुशासन से रहित हो, जिसमें सब सहभागी हो गए हैं, तो तुम नाजायज़ सन्तान ठहरे, और वैध सन्तान नहीं।

चूँकि हमारे जैविक पिता हमारे अनुशासनकर्ता थे और उन्होंने ध्यान दिया, तो क्या हमें आत्माओं के पिता के अधीन नहीं रहना चाहिए और जीवित नहीं रहना चाहिए? क्योंकि उन्होंने हमें थोड़े समय के लिए अनुशासित किया जैसा कि उन्हें सबसे अच्छा लगा, लेकिन वह हमें हमारे लाभ के लिए अनुशासित करता है ताकि हम उसकी पवित्रता में भागीदार हो सकें। और सभी अनुशासन वर्तमान समय के लिए आनंददायक नहीं बल्कि दुखद प्रतीत होते हैं। लेकिन बाद में, यह उन लोगों को धार्मिकता का शांतिपूर्ण फल देता है जो इसके द्वारा प्रशिक्षित हुए हैं।

मण्डली ने जो कठिनाइयाँ झेली हैं और जो दृढ़ता की कीमत के रूप में झेल रही हैं, उन्हें यहाँ परमेश्वर के माता-पिता के रचनात्मक अनुशासन के रूप में व्याख्यायित किया गया है। इस अंश में ग्रीक शब्द पैडिया और उससे संबंधित रूपों का बोलबाला है, जो कम से कम सात बार दिखाई देते हैं, जो इस व्याख्यात्मक लेंस को मजबूत करते हैं। इस प्रकार दुनिया द्वारा अस्वीकार किए जाने के अनुभव को रणनीतिक रूप से विश्वासी के परमेश्वर के परिवार में गोद लिए जाने के संकेत में बदल दिया जाता है।

ईश्वर उन्हें पुत्र और पुत्रियों के रूप में मानता है, और उनके संघर्ष ही वे साधन हैं जिनके द्वारा ईश्वर उनके चरित्र को आकार देता है और उन्हें ईश्वर के शहर, उस राज्य के भावी नागरिकों के लिए उपयुक्त गुणों से सुसज्जित करता है जिसे वे प्राप्त करने की दहलीज पर हैं। शर्मिंदगी और हाशिए पर डाले जाने के अनुभव, वास्तव में, ईश्वर की दृष्टि में उनके सम्मानित और पसंदीदा दर्जे के प्रमाण बन जाते हैं। लेखक ने उपदेश के इस खंड की शुरुआत नीतिवचन 3, श्लोक 11 और 12 को पढ़कर की है, विशेष रूप से इसे उस पाठ के रूप में उद्धृत करते हुए जो ईश्वर और संबोधित लोगों के बीच पिता-पुत्र और पिता-पुत्री के रिश्ते को स्थापित करता है।

नीतिवचन 3 के हिब्रू संस्करण और सेप्टुआजेंट अनुवाद, उसी पाठ के यूनानी अनुवाद के बीच यहाँ थोड़ा बदलाव है। हिब्रू पाठ में, सादृश्य का तत्व बहुत स्पष्ट है। जैसे एक पिता अपने बेटे को डांटता है जिससे वह प्रसन्न होता है, सेप्टुआजेंट ने सादृश्य की गुणवत्ता को अस्पष्ट कर दिया है, इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, वह हर उस बच्चे को डांटता है जिसे वह प्राप्त करता है।

इस प्रकार, यह श्लोक परमेश्वर की ताड़ना का वर्णन करने के लिए एक उपयोगी सादृश्य के बजाय परमेश्वर द्वारा वास्तविक गोद लेने का प्रमाण बन जाता है। हिब्रू से ग्रीक में यह संशोधन लेखक के उद्देश्यों के लिए पाठ को और भी अधिक उपयोगी बनाता है। जबकि नीतिवचन ने स्वयं अनुशासन के एक दंडात्मक मॉडल को स्पष्ट किया था, इब्रानियों के लेखक, अधिकांश ग्रीको-रोमन लेखकों और फिलिस्तीन से हटाए गए यहूदी लेखकों की तरह, दंडात्मक के बजाय ईश्वर के अनुशासन या प्रशिक्षण को रचनात्मक या शिक्षाप्रद के रूप में समझने के पक्ष में थे।

नीतिवचन 3, 11, और 12 के लेखक के पाठ के बाद के छंदों में, लेखक बार-बार पेडेया, प्रारंभिक अनुशासन की बात करेगा, लेकिन नीतिवचन पाठ के उन पहलुओं को कभी नहीं दोहराएगा जो दंडात्मक दिशा में ले जाते हैं, जैसे कि फटकारा जाना या क्रिया मास्टिगोई, वह दंड देता है, जो वास्तव में उसी मूल पर आधारित है जो हमें कोड़ा शब्द देता है। इन छंदों में लेखक के उपदेश के लिए एक उल्लेखनीय तुलनात्मक पाठ सेनेका के प्रोविडेंस, डी प्रोविडेंटिया पर संक्षिप्त उपचार में दिखाई देता है, जहां पहली शताब्दी के पूर्वार्ध के लैटिन दार्शनिक सेनेका भी कठिनाइयों को सहन करने की बात दैवीय अभिभावकीय अनुशासन के रूप में करते हैं। इस ग्रंथ में, सेनेका लिखते हैं कि ऋषि भगवान का शिष्य, अनुकरणकर्ता और सच्चा संतान है

भगवान बुद्धिमान व्यक्ति को बेटे की तरह पालते हैं। भगवान बुद्धिमान व्यक्ति को परखते हैं, क्षमा करते हैं और उसे अपने लिए तैयार करते हैं। सबसे प्रभावशाली सेनेका का कथन है, जिसे भगवान स्वीकार करते हैं और प्यार करते हैं, भगवान उन्हें कठोर बनाते हैं, जांचते हैं और अभ्यास कराते हैं।

सेनेका ने ईश्वर के पितृसत्तात्मक प्रशिक्षण की तुलना स्पार्टन पिताओं द्वारा बच्चों को सार्वजनिक रूप से कोड़े मारने के तरीके से की है, जो बच्चे द्वारा सहनशीलता और साहस जैसे बहुमूल्य गुणों की प्राप्ति के प्रदर्शन के रूप में किया जाता था। यह उल्लेखनीय है कि स्पार्टन का यह कोड़ा मारना दंडात्मक नहीं बल्कि प्रमाणिक था। यह बच्चों के धैर्य और प्रशिक्षण का प्रदर्शन था, किसी भी तरह से सजा नहीं।

सेनेका और इब्रानियों दोनों में, इस भावना का पूर्ण अभाव है कि ये कठिनाइयाँ पीड़ितों पर इसलिए आती हैं क्योंकि उन्होंने कुछ गलत किया है। इसके बजाय, जोर उन सकारात्मक फलों पर है जो ऐसे परीक्षणों के साहसी धीरज से प्रशिक्षु में पैदा होंगे। मैं इस पर इसलिए बात करता हूँ क्योंकि यह महत्वपूर्ण है कि हम लेखक को यह न समझाएँ कि वे श्रोताओं को यह बता रहे हैं कि वे इसलिए पीड़ित हैं क्योंकि ईश्वर उन्हें दंडित कर रहा है, बल्कि इसलिए कि ईश्वर उन्हें आकार दे रहा है और प्रशिक्षित कर रहा है।

नीतिवचन 3 के अपने पाठ के आधार पर, लेखक श्रोताओं को एक बार फिर से रचनात्मक अनुशासन के उद्देश्य से धीरज धरने के लिए प्रोत्साहित करता है। परमेश्वर तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसा वह बेटों और बेटियों के साथ करता है। उपदेश का जोर धीरज पर रहता है, जिसे लेखक ने पहले ही बार-बार संबोधित करने वालों से आग्रह किया है, उदाहरण के लिए, अध्याय 10, श्लोक 32 और 35 में, और हाल ही में अध्याय 12 में श्लोक 1 से 3 तक।

लेखक यहाँ अपने उपदेश को मानव पिता द्वारा पाले गए सभी बच्चों के अनुभव के साथ एक सामान्य सादृश्य के साथ तर्कपूर्ण ढंग से विकसित कर रहा है। ऐसा कौन सा बच्चा है जिसे पिता प्रशिक्षित नहीं करता? वह इसके विपरीत एक दिलचस्प तर्क के साथ आगे बढ़ता है। यदि आप ऐसे प्रशिक्षण के बिना हैं जिसमें सभी बच्चे हिस्सा लेते हैं, तो आप नाजायज बच्चे हैं और असली बच्चे नहीं हैं।

लेखक यहाँ एक बहुत ही शानदार बयानबाजी कर रहा है। वह मसीह के लिए झेली गई निंदा और नुकसान के अनुभव को अनुग्रह और सम्मान का संकेत बना रहा है, और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक रूप से, इस तरह की कठिनाई का अभाव, जो कि पक्षपात और अपमान का संकेत है, यह संकेत है कि परमेश्वर उन्हें आकार देने और उनके चरित्र को आकार देने में निवेशित नहीं है, जिस तरह से परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु के चरित्र को आकार दिया, जिसने अपने कष्टों के माध्यम से आज्ञाकारिता सीखी, जैसा कि हमने पहले धर्मोपदेश में सुना था। श्रोता निस्संदेह इस अनुशासन में भाग लेने के यीशु के अपने अनुभव को याद करेंगे, जिस पर लेखक ने अध्याय 5, श्लोक 7 से 10 में विस्तार से चर्चा की है।

श्रोताओं को इस अनुभव में हिस्सा लेने के लिए बुलाया जाता है ताकि उन्हें भी बेटे के सम्मान और सद्गुण में हिस्सा लेने का लाभ मिल सके। जहाँ तक वे अनुशासन के भागीदार हैं, वे महिमा की अंतिम अवस्था में मसीह के साथ भी भागीदार हैं। यह संयोग नहीं हो सकता कि लेखक ने यहाँ 12.8 में मेटाचोई शब्द को दोहराया है जिसका इस्तेमाल उसने पहले अध्याय 3, श्लोक 14 में किया था, शायद इस अर्थ को जोड़ने के लिए कि मसीह के अनुशासित होने के अनुभव के साथ साझा करना महिमा की अंतिम अवस्था में मसीह के साथ साझा करने की ओर ले जाता है।

लेखक अपने उपदेश को और अधिक पुष्ट करने के लिए इस तर्क के विपरीत एक छोटे से बड़े तर्क का उपयोग करता है। हमारे प्रशिक्षकों के रूप में हमारे जैविक पिता थे, और हमने श्रद्धा के साथ उनका पालन किया। क्या हमें आत्माओं के पिता के प्रति और भी अधिक समर्पित नहीं होना चाहिए और जीवित नहीं रहना चाहिए? सांसारिक पिताओं और आत्माओं के पिता के बीच इस अंतर में, एक तरह का अंतर्निहित तर्क है जो आत्माओं की देह से श्रेष्ठता को मानता है।

माता-पिता के रूप में भगवान एक महान और अधिक परम अर्थ में एक हैं, हमारे जीवन के पिता, हमारी आत्मा के पिता, न कि केवल हमारे जैविक अस्तित्व को जन्म देने वाले पिता होने के विपरीत। और इस प्रकार, भगवान हमारे प्रशिक्षण के प्रति श्रद्धापूर्ण समर्पण के अधिक हकदार हैं, न कि उस प्रशिक्षण से पीछे हटना और उससे बचने की कोशिश करना। इस तरह के समर्पण का परिणाम यह है कि हम जीवित रहेंगे।

और श्रोता शायद यहाँ जीवन को उसी अर्थ में सुनेंगे जैसा कि इसे अध्याय 10, श्लोक 37 से 39 में थोड़ा पहले प्रस्तुत किया गया था। लेखक न केवल ईश्वर के रचनात्मक अनुशासन के अधीन होने के परिणामस्वरूप भौतिक अस्तित्व का उल्लेख कर रहा है, बल्कि जीवन को युगांतिक उत्तरजीविता के रूप में संदर्भित कर रहा है। 10:37 से 39 में, धर्मी व्यक्ति विश्वास से जीता है, क्योंकि केवल वे ही जो विश्वासी हैं, युगांतिक प्रलय से बचेंगे और अडिग क्षेत्र में ईश्वर के साथ रहेंगे।

जैसा कि लेखक आगे कहते हैं, वे फिर से सांसारिक माता-पिता और ईश्वरीय माता-पिता के बीच तुलना करते हैं। श्रोताओं के सांसारिक माता-पिता ने श्रोताओं को थोड़े समय के लिए उनके अनुसार अनुशासित किया। लेकिन ईश्वर का अनुशासन पूरी तरह से हमारे लाभ के लिए है।

सांसारिक माता-पिता के अनुशासन के विपरीत, इस अनुशासन के मूल्य के बारे में संदेह का कोई संकेत नहीं है, जो कभी-कभी सही होता है और कभी-कभी गलत। ईश्वर के प्रशिक्षण का अंतिम परिणाम ईश्वर की पवित्रता में हिस्सा लेना है, जो कि, संक्षेप में, लेवितिकल कानून संहिता के मूल में ईश्वर के आदेश की पूर्ति है कि मैं पवित्र हूँ जैसा कि मैं पवित्र हूँ। लेखक इस उपदेश के खंड को प्रसिद्ध कहावत का एक विस्तृत विवरण जोड़कर समाप्त करता है: शिक्षा की जड़ कड़वी होती है, लेकिन इसका फल मीठा होता है।

फल के लिए कार्पोस जैसे कीवर्ड पाते हैं, जो इब्रानियों 12, श्लोक 11 में भी काफी प्रमुखता से दिखाई देते हैं, जो संबोधित करने वालों को और भी स्पष्ट रूप से उस कहावत का संकेत देते हैं जिस पर वह टिप्पणी कर रहा है। सभी शैक्षिक अनुशासन, पेडेया, वर्तमान समय में आनंददायक नहीं बल्कि दुखद प्रतीत होते हैं, लेकिन बाद में उन लोगों के लिए धार्मिकता का शांतिपूर्ण फल, कार्पोस, प्रदान करते हैं, जिन्हें इसके द्वारा प्रशिक्षित किया गया है। प्राचीन दुनिया में अंतर्निहित कहावत की सच्चाई की व्यापक स्वीकृति को देखते हुए, श्रोताओं द्वारा अपने अनुभवों के लिए एक व्याख्यात्मक ढांचे के रूप में इस कहावत के अनुप्रयोग को स्वीकार करने की अधिक संभावना है और इस प्रकार, उन अनुभवों के बीच निरंतर धीरज के लिए लेखक के आह्वान को स्वीकार करते हैं।

एथलेटिक रूपक यहाँ फिर से सूक्ष्म रूप से प्रशिक्षण शब्द, गेगुम्रास्मेनोइस के साथ प्रवेश करता है, जो जिमनासियन, व्यायामशाला की मौखिक प्रतिध्वनि है, जहाँ ग्रीक शहर-राज्य के भावी नागरिकों को शारीरिक कौशल और शक्ति के विकास के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाता था। इन अभ्यासों का लक्ष्य जो श्रोता अपनी ईसाई प्रतिबद्धता के लिए सहन कर रहे हैं, लेखक के अनुसार, उनकी आत्मा और जीवन में धार्मिकता या न्याय, डाइकायोसुने के गुण का निर्माण है। यह ग्रीको-रोमन नैतिक दर्शन में मनाए जाने वाले चार प्रमुख गुणों में से एक है और निश्चित रूप से, पुराने नियम की शास्त्रीय परंपरा में प्रचारित एक मुख्य गुण भी है।

इन प्रशिक्षण अभ्यासों के माध्यम से, विश्वासियों की नैतिक क्षमता का निर्माण और सुदृढ़ीकरण होता है ताकि विश्वासी सीख सके कि कैसे हमेशा परमेश्वर का सम्मान करना और साथी विश्वासियों के प्रति अपने दायित्वों का सम्मान करना चुनना है, इसलिए धार्मिकता के साथ न्यायपूर्ण तरीके से कार्य करना है। उनकी दृढ़ता का परिणाम उनके दिलों और जीवन में इस बहुमूल्य मूल्य, इस बहुमूल्य गुण का निर्माण होगा, जो उन्हें उस शहर के सम्माननीय नागरिक के रूप में जीने के लिए उपयुक्त बनाएगा जिसे परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है। उन्हें बेटे और बेटियों के रूप में संबोधित करने वाला उपदेश श्रोताओं को इन प्रशिक्षण अभ्यासों की ओर साहसपूर्वक मुड़ने और उस पाठ्यक्रम को चलाने के लिए कहता है जो धार्मिकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को बढ़ाता और मजबूत करता है, बजाय इसके कि वे ऐसे प्रशिक्षण से दूर हटें या इसे अपनाने के बजाय टालने वाली चीज़ के रूप में देखें, एक मानसिकता जो उन लोगों में स्पष्ट है जो ईसाइयों के एक साथ इकट्ठा होने से दूर हटने लगे हैं।

लेखक आग्रह करता है कि, इसके विपरीत, उनके पड़ोसी की शत्रुता वास्तव में ईश्वर के लक्ष्यों की सेवा कर रही है जब तक कि विश्वासी अपने महान लक्ष्य को छोड़ने के लिए उस दबाव के आगे झुकने से इनकार करते हैं। इसलिए, उचित तरीका, जो उनके सम्मान को बनाए रखता है

और बढ़ाता है, इन रचनात्मक अभ्यासों से बचना नहीं बल्कि उन्हें अपनाना है। शिक्षाप्रद अनुशासन और प्रशिक्षण के बीच का संबंध एथलेटिक भाषा की ओर एक पुल बनाता है जो इब्रानियों 12, 12 और उसके बाद के प्रत्यक्ष उपदेश की बहाली की विशेषता है।

इसलिए अपने ढीले हाथों और कमजोर घुटनों को सीधा करो और अपने पैरों के लिए सीधे रास्ते बनाओ ताकि जो लंगड़ा है वह बिखरने के बजाय चंगा हो जाए। लेखक यहाँ सीधे उपदेश देते हुए शास्त्र की भाषा का भरपूर उपयोग कर रहा है। वह यशायाह 35, 3 की भाषा को याद करता है, ढीले हाथों और कमजोर घुटनों को मजबूत बनाओ।

यशायाह, अपने संदर्भ में, रेगिस्तान के खेलने और उसके माध्यम से तैयार किए जाने वाले राजमार्ग के बारे में दिव्य उद्धार की भविष्यवाणी के आधार पर श्रोताओं को प्रोत्साहित कर रहा था ताकि परमेश्वर प्रभु के छोड़ा हुआ लोगों को उत्सव के गीतों के बीच सियोन में वापस ले जा सके। जिस तरह यशायाह ने अपने श्रोताओं को अपने संकल्प को दृढ़ करने और परमेश्वर के आगामी उद्धार के मद्देनजर अपनी उम्मीदों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया, उसी तरह इब्रानियों के लेखक परमेश्वर के नए लोगों को उस युगांतकारी उद्धार के प्रकाश में ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिसके लिए परमेश्वर वर्तमान में श्रोताओं को प्रशिक्षित कर रहा है। उन्हें स्वर्गीय शहर की ओर अपनी दौड़ जारी रखनी है जहाँ एक उत्सवी सभा का इंतज़ार है, और लेखक जल्द ही प्रदर्शित करने के लिए आगे बढ़ेगा।

उन्हें अपने बचाव के साथ आगे बढ़ना है, पाप के खिलाफ अपने मुकाबले में अच्छे मुक्केबाजों की मुद्रा में अपने हाथ ऊपर उठाने हैं और उनकी आगे की गति अडिग है। वह नीतिवचन 4, श्लोक 26 से भाषा भी लाता है, जहाँ हम पढ़ते हैं, अपने पैरों के लिए सीधा मार्ग बनाओ और अपने मार्गों को मजबूत करो, सीधा करो। नीतिवचन का संदर्भ उन मार्गों को चुनने की बात करता है जो दुष्टों के बजाय न्यायपूर्ण हैं, एक ऐसा संबंध जिसने लेखक को प्रेरित किया होगा जो एक अन्यायी के विरुद्ध ईश्वरीय संरक्षक के जवाब में न्यायपूर्ण कार्यवाही के रूप में जो कुछ भी समझता है उसे बढ़ावा देने के लिए चिंतित था, इस पाठ को अपने उपदेश में शामिल करने के लिए।

इब्रानियों के लेखक के लिए, न्यायपूर्ण तरीके से चलना शारीरिक उपचार का आध्यात्मिक समकक्ष है जो सावधानीपूर्वक निर्देशित और निर्धारित व्यायाम के माध्यम से लंगड़े जोड़ को ठीक करता है। सही मार्ग क्या है? लेखक यहाँ सभी के साथ शांति और पवित्रता का पालन करने का सुझाव देता है, जिसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देख पाएगा। सावधान रहें कि कहीं कोई परमेश्वर के वरदानों से वंचित न रह जाए, कहीं कोई कड़वाहट की जड़ न उग आए जो परेशानी का कारण बने और बहुत से लोग उसके द्वारा अशुद्ध हो जाएँ, कहीं कोई एसाव की तरह अनैतिक या अपवित्र न हो जाए।

इन आयतों की शुरुआत में, लेखक भजन 33, आयत 14 को याद करता है, शांति की तलाश करो और उसका पीछा करो। ईसाई समुदाय के भीतर शांतिपूर्ण संबंध, निश्चित रूप से, अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन लेखक बाहरी लोगों के प्रति शांतिपूर्ण स्वभाव को भी प्रोत्साहित कर रहा है, भले ही उन बाहरी लोगों का खुद ईसाइयों के प्रति बहुत अलग स्वभाव हो। 1 पतरस शत्रुतापूर्ण सेटिंग में इस गतिशीलता पर बहुत अधिक ध्यान देता है, गाली के बदले गाली या गाली के बदले

गाली नहीं देता, बल्कि जितना संभव हो उतना प्यार से जीवन जीता है, बिना परमेश्वर को दिए गए अधिकार का उल्लंघन किए, इस प्रकार शांतिपूर्वक जीवन जीने के लिए आवश्यक चीजों से समझौता नहीं करता।

शांति की खोज के साथ-साथ, उपदेशक पवित्रता की खोज के महत्व को बढ़ाता है, पवित्रता की उस स्थिति में पूरी तरह से जीना जो मसीह ने उनके लिए खोली थी जब उसने उन्हें पवित्र किया था, उन्हें उनके दिव्य भाग्य के लिए अलग रखा था। यहाँ यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि पवित्रता अध्याय 12, श्लोक 10 में कुछ ही छंद पहले दिव्य अनुशासन का परिणाम थी। इस प्रकार, पवित्रता या पवित्रता की खोज, आंशिक रूप से, दिव्य अनुशासन को सहन करने और इस प्रक्रिया में आगे बढ़ते रहने के आह्वान का पुनर्कथन है।

लेखक के मन में, ईश्वर को देखना तब होता है जब विश्वासी अंतिम दिन ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करता है। यदि वे शांति और पवित्रता की खोज के इस मार्ग पर चलते रहें, हाथ ऊपर उठाकर और घुटनों को मजबूत करके ईश्वर के रचनात्मक अनुशासन को सहन करें, तो वे वास्तव में अंततः ईश्वर को देखने के उस बिंदु पर पहुंचेंगे। जैसा कि लेखक आगे कहते हैं, आप में से कोई भी ईश्वर के उपहार से वंचित न रह जाए, वह फिर से सामुदायिक जिम्मेदारी पर जोर देते हैं जो सभी विश्वासियों को लक्ष्य की ओर प्रत्येक व्यक्तिगत विश्वासी की दृढ़ता के लिए साझा करनी होती है।

समुदाय के हर सदस्य को यह सुनिश्चित करने का दायित्व सौंपा गया है कि उसके भाई-बहनों को धोखा न दिया जाए या उन्हें परमेश्वर के वादा किए गए विश्राम, स्वर्गीय मातृभूमि में प्रवेश करने से पहले ही रोक दिया जाए, ठीक वैसे ही जैसे निर्गमन की पीढ़ी परमेश्वर के उपहार से वंचित रह गई थी। लेखक उनसे यह भी आग्रह करता है कि वे सुनिश्चित करें कि उनके बीच कड़वाहट की कोई जड़ न उगे, जिसके माध्यम से कई लोग अपवित्र हो सकते हैं। यह उपदेश व्यवस्थाविवरण 29, श्लोक 17 को पुनः संदर्भित करता है, विशेष रूप से सेप्टुआजेंट अनुवाद में, जहाँ मूसा बीच के लोगों को चेतावनी देता है जो वाचा को बनाए रखने से इनकार करते हैं बल्कि अपनी मूर्तियों से चिपके रहते हैं।

ऐसा व्यक्ति वास्तव में कड़वाहट की जड़ होगा, जो परेशानी पैदा करने के लिए उगता है। उपदेशक इसे कुछ लोगों के धर्मत्याग पर लागू करता है, जो बहक रहे हैं। बहुतों को अपवित्र करना मोहभंग और संकल्प की कमजोरी को व्यक्त करने का एक प्रतीकात्मक तरीका है जो उन लोगों द्वारा महसूस किया जाएगा जिन्होंने अपने पूर्व बहनों और भाइयों को इस दौड़ में हारते हुए देखा है।

लेखक फिर एसाव के उदाहरण पर आधारित एक थोड़े अधिक विस्तारित उपदेश में आगे बढ़ता है, और इस उदाहरण के माध्यम से, लेखक धर्मत्याग के बारे में सोचने के ताबूत में अंतिम कील ठोकने की उम्मीद करता है, चाहे वह औपचारिक धर्मत्याग हो या केवल व्यावहारिक धर्मत्याग, क्योंकि व्यक्ति समाज की बाहों में वापस चला जाता है। श्रोताओं को अभी भी सावधान रहना है, कहीं कोई एसाव की तरह व्यभिचारी या अपवित्र न हो जाए, जिसने एक भोजन के लिए, अपने ज्येष्ठ पुत्र होने के अधिकार को बेच दिया। क्योंकि आप जानते हैं, बाद में, आशीर्वाद प्राप्त करने

की इच्छा रखते हुए, उसे मना कर दिया गया, क्योंकि उसे पश्चाताप के लिए जगह नहीं मिली, भले ही उसने आँसू बहाकर इसकी तलाश की हो।

एसाव की कहानी का यह सार-संक्षेप इब्रानियों 6, 4 से 8 की चेतावनी को बहुत मजबूती से याद दिलाता है, जिसमें कहा गया है कि पश्चाताप के शुरुआती द्वार पर वापस जाने के लिए कोई दूसरा मौका नहीं है। एसाव को उत्पत्ति में, विशेष रूप से व्यभिचारी के रूप में नहीं जाना जाता है, लेकिन द्वितीय मंदिर काल की परंपराएँ एसाव की यौन अनैतिकता के रूप में एक तस्वीर विकसित करती हैं, विशेष रूप से हिती पत्नियों से उसके विवाह के आधार पर, जिसे हम उत्पत्ति 26 पद 32 में पाते हैं। लेखक यहाँ व्यभिचार का उपयोग अविश्वास के रूपक के रूप में कर सकता है।

संख्या 14 पद 33 में इस शब्द का रूपकात्मक उपयोग, कनान की दहलीज पर जंगल की पीढ़ी की विफलता की कहानी, जिसे इब्रानियों के उपदेश में पहले से ही इतनी प्रमुखता से दर्शाया गया है, ऐसी समझ का समर्थन करेगा। वहाँ, परमेश्वर ने आदेश दिया कि लोग अपने व्यभिचार को तब तक सहते रहेंगे जब तक कि उनके शरीर रेगिस्तान में समाप्त नहीं हो जाते। एसाव की ईश्वरविहीनता या सांसारिकता प्रदर्शित होती है क्योंकि वह दिखाता है कि वह परमेश्वर के वादों और उपकारों को बहुत कम महत्व देता है, यहाँ इसहाक के पुत्र, अब्राहम के पुत्र के रूप में उसके जन्मसिद्ध अधिकार द्वारा दर्शाया गया है, जो उसके रास्ते में आने वाली बेहतर और स्थायी संपत्ति की तुलना में भूख की तत्काल कठिनाई से अस्थायी राहत का चयन करता है।

एसाव का उदाहरण समुदाय के अपने पिछले उदाहरण, मूसा या शहीदों या यीशु के उदाहरणों के लिए एक आधार के रूप में कार्य करता है, जिनमें से सभी ने ईश्वर द्वारा वादा किए गए महान भलाई के लिए, कुछ ने चरम सीमा तक, अस्थायी कठिनाई को सहना जारी रखा। इस प्रकार लेखक एसाव के उदाहरण के माध्यम से एक रणनीतिक सादृश्य प्रस्तुत करता है। समाज की वस्तुएँ ईश्वर के पुरस्कार हैं, जैसे दाल का एक कटोरा जन्मसिद्ध अधिकार है।

एसाव द्वारा अपने जन्मसिद्ध अधिकार के लिए भोजन के सापेक्ष मूल्य और लाभ के खराब मूल्यांकन ने सहस्राब्दियों से उसकी स्मृति को कलंकित किया है, जिससे वह बुद्धिमानी और सद्गुणी तरीके से विकल्पों का मूल्यांकन करने का हास्यास्पद विरोधी उदाहरण बन गया है। इस प्रकार संबोधित करने वालों को अपने स्वयं के विकल्पों के बारे में स्पष्ट रूप से सोचने के लिए आमंत्रित किया जाता है ताकि वे अपने गैर-विश्वासी पड़ोसियों के बीच कुछ दशकों की शांति और सुरक्षा के लिए अपने शाश्वत जन्मसिद्ध अधिकार को बेचकर उसी मूर्खता का प्रदर्शन करने से बचें। एसाव के उदाहरण की अपनी प्रस्तुति को गढ़ने में, इब्रानियों के लेखक ने अपने श्रोताओं का सामना करने वाली देहाती जरूरतों के लिए अपनी प्रस्तुति को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ तत्वों को मिलाया है।

उत्पत्ति 25 के प्रकरण में, श्लोक 29 से 34 तक, एसाव को पता था कि उसने अपने जन्मसिद्ध अधिकार, सबसे बड़े बेटे के रूप में बड़े हिस्से के अपने अधिकार को बेच दिया था। हालाँकि, उत्पत्ति 27 के बाद के प्रकरण में, श्लोक 30 से 36 तक, एसाव ने कोई संकेत नहीं दिया कि ज्येष्ठ पुत्र के रूप में अपने जन्मसिद्ध अधिकार को बेचने में वह आशीर्वाद भी शामिल था जो उसके

पिता इसहाक की मृत्यु के समय उसे मिलना चाहिए था। वास्तव में, याकूब को इसहाक को धोखा देने के लिए कुछ हद तक जाना पड़ा ताकि वह उसे वह आशीर्वाद दे सके जो ज्येष्ठ पुत्र को भी मिलता है, और एसाव को इस बात का कोई एहसास नहीं है कि उसे अपने भाई के साथ इतने साल पहले किए गए सौदे के परिणामस्वरूप आशीर्वाद नहीं मिलना चाहिए।

हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने जन्मसिद्ध अधिकार और आशीर्वाद को एक साथ जोड़ दिया है ताकि एसाव को और अधिक स्पष्ट रूप से उस चीज़ को वापस पाने की असंभवता का उदाहरण बनाया जा सके जिसे पहले कम करके फेंक दिया गया था। इस प्रकार, कई साल पहले ज्येष्ठ पुत्र के रूप में अपने अधिकारों को देने से एसाव के शेष जीवन पर परिणाम हुए। इसहाक की मृत्युशैया के पास खड़े होने के कारण, जो कुछ उसने खो दिया था उसे वापस पाने का कोई दूसरा मौका नहीं था।

जो लोग उत्पत्ति की कहानी पढ़ते हैं, उन्हें निस्संदेह एसाव का अपने पिता इसहाक के सामने का दृश्य काफी दुखद लगेगा, जब वह अपने पिता से आँसू बहाते हुए विनती करता है। पिता, क्या मेरे लिए कोई आशीर्वाद नहीं बचा है? यह हिब्रू के श्रोताओं पर पासा पलटने का एक स्पष्ट प्रभाव डालता है, हालाँकि अब बिल्कुल अलग कारण से। यह ठीक वही छवि है जिसे लेखक समाज के साथ शांति के लिए ईश्वर के साथ शांति का व्यापार करने के परिणामों से जोड़ना चाहता है।

एसाव की तरह, जो लोग परमेश्वर के उपहारों और परमेश्वर के वादों को त्याग देते हैं, उन्हें पश्चाताप के लिए कोई जगह नहीं मिलेगी। पश्चाताप स्वयं परमेश्वर का उपहार है जिसे देना या रोकना है। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो इब्रानियों के लेखक के लिए अद्वितीय नहीं होगा।

हम सुलेमान की बुद्धि में भी कुछ ऐसा ही पाते हैं, जहाँ पश्चाताप स्वयं लोगों को ईश्वर का उपहार है, और जब तक ईश्वर इसे प्रदान नहीं करता, तब तक वे पश्चाताप प्राप्त नहीं कर सकते। इस तरह, लेखक फिर से इस बात पर बल देता है कि ईश्वर के अनुग्रह को बहुत हल्के में लेना वास्तव में खतरनाक है। इस प्रकार एसाव का उदाहरण चेतावनियों को दृढ़ता से पुष्ट करता है, विशेष रूप से 648 और 1026 और उसके बाद के उदाहरणों में।

जिन लोगों ने बार-बार ईश्वर के उपकार प्राप्त किए हैं और फिर उन्हें फेंक दिया है, वे बदले में किसी अनुग्रह की उम्मीद नहीं कर सकते, उस मार्ग पर फिर से चलने का कोई दूसरा मौका नहीं पा सकते, ठीक वैसे ही जैसे एसाव ने पाया कि ईश्वर के साथ अपने रिश्ते में जो नुकसान उसने किया था, उसे ठीक करने का अंत में कोई मौका नहीं था। लेखक दृढ़ रहने के अपने उपदेशों का अनुसरण करते हुए पुराने नियम के तहत लोगों द्वारा ईश्वर के पास आने के तरीके और अब जब नए नियम का उद्घाटन हो चुका है, तो लोगों को ईश्वर के पास आने के लिए आमंत्रित करने के अधिक उत्सवपूर्ण, आकर्षक, स्वागत करने वाले तरीके के बीच अंतर का चित्रण करता है, क्योंकि आप किसी स्पष्ट और जलती हुई चीज़, आग और अंधकार और उदासी और बवंडर और तुरही की प्रतिध्वनि और शब्दों की ध्वनि के करीब नहीं आए हैं।

उस आवाज़ को सुनने वालों ने विनती की कि भाषण को लंबा न किया जाए, क्योंकि वे आदेश को सहन नहीं कर सकते थे। अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छूता है, तो उसे पत्थरों से मार दिया जाएगा। वास्तव में, यह भ्रम इतना भयानक था कि मूसा ने कहा, मैं डर गया हूँ और काँप रहा हूँ।

लेकिन तुम सिव्थोन पर्वत और जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और उत्सव के भजन में स्वर्गदूतों के असंख्य लोगों और स्वर्ग में लिखे ज्येष्ठों की सभा और परमेश्वर, सबका न्याय करने वाले और सिद्ध धर्मी लोगों की आत्माओं और यीशु, एक नई वाचा के मध्यस्थ और छिड़के गए लहू के पास पहुँच गए हो जो हाबिल के लहू से बेहतर कुछ बोल रहा है। ग्रीक में शब्द, गार, यह दर्शाता है कि लेखक लेखक के उपदेशों को स्वीकार करने और उन पर ध्यान देने के लिए एक तर्क के रूप में विपरीत छवियों की इस जोड़ी को प्रस्तुत करता है। वे जो लाभ उठाते हैं, वे सभी मांग करते हैं कि वे इस अभूतपूर्व स्वागत और सुंदर स्वागत की ओर आगे बढ़ते रहें जिसे परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है।

ईश्वर के प्रति दो दृष्टिकोणों के बीच अंतर इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकता। पहला भौतिक क्षेत्र में हुआ, और दूसरा स्थायी अदृश्य क्षेत्र में। पहला भय से चिह्नित था और पवित्रता संबंधी वर्जनाओं से घिरा हुआ था, जिसके लिए कठोर दंड का प्रावधान था।

दूसरा भाग ईश्वर की उत्सवपूर्ण आराधना से चिह्नित है। लेखक श्रोताओं पर संचयी प्रभाव डालने के लिए एक छोटे से कम्पास में छवियों का खजाना एक साथ लाता है, जो प्रत्येक व्यक्तिगत घटक के व्यक्तिगत अर्थ या ऐसे विवरणों के सूक्ष्म विश्लेषण से परे है। इस अंश का पहला भाग सिनाई में ईश्वर से मिलने के अनुभव के वृत्तांतों पर व्यापक रूप से आधारित है, विशेष रूप से निर्गमन 19:12 से 19, और व्यवस्थाविवरण 4:11 से 12 में।

यहाँ क्रिया दृष्टिकोण, आपने संपर्क किया है, उसी क्रिया का दूसरा रूप है जो पूरे उपदेश में प्रमुखता से दिखाई देती है, क्योंकि लेखक ने श्रोताओं से निकट आते रहने का आग्रह किया है। यहाँ इसकी पुनरावृत्ति पूरे उपदेश में उन आमंत्रणों का एक प्रकार का सारांश प्रदान करती है। लेखक निषेधों से घिरे उस भयावह दृष्टिकोण को नकारता है, जो स्पष्ट रूप से मनुष्यों और जानवरों को उस पर्वत को छूने से भी मना करता है जहाँ भगवान उतर रहे थे।

भयावह उदासी, डरावनी आवाज़ें, आवाज़ें, इनमें से कुछ भी श्रोता के ईश्वर के प्रति नए दृष्टिकोण का हिस्सा नहीं है जिसे यीशु ने खोला है। यहाँ मूसा द्वारा भय की स्वीकारोक्ति वास्तव में व्यवस्थाविवरण अध्याय 9 में बाद में ही दिखाई देती है, और लेखक ने इसे कुछ हद तक संदर्भ से बाहर ले लिया है। यह मूल रूप से सोने के बछड़े की घटना के बाद ईश्वर के क्रोध के बारे में मूसा की घबराहट को संदर्भित करता था, जो माउंट सिनाई पर कानून देने के समय ईश्वरीय उपस्थिति, थियोफनी से काफी बाद में आया था।

यह अब लेखक की ईश्वर तक पहुंचने की भयावह और सीमित पहुंच की प्रस्तुति का शिखर बन गया है, जिसे ईसा ने ईसाइयों के लिए तोड़ दिया है। 12 श्लोक 18 से 21 द्वारा बनाए गए इस भयावह चित्र के साथ, लेखक ईसाई तीर्थयात्रा के अंत में लक्ष्य के लिए अपनी दृष्टि प्रस्तुत करता है, जो अब और भी अधिक उज्ज्वल दिखाई देता है। माउंट सिनाई अपनी छत के साथ नहीं,

बल्कि माउंट सियोन, अपने उत्सव के आनंद के साथ, उनकी यात्रा के अंत में उनका इंतजार कर रहा है।

लेखक ने इसे स्वर्गीय पूजा-पद्धति में स्वर्गदूतों के उत्सवी जमावड़े के साथ पूजा के दृश्य के रूप में दर्शाया है। इस पर्वत के चारों ओर भयावह और निराशाजनक मौसम संबंधी घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि स्वर्गदूतों की सेना एक स्तुतिगान में एकत्रित हुई है, जो अडिग राज्य के शासक की प्रशंसा में एक उत्सव गीत है। यहाँ भी, कई ज्येष्ठ पुत्रों की सभा है।

एसाव के विपरीत, जिसने ज्येष्ठ पुत्र की विरासत को त्याग दिया, विश्वास के इन लोगों ने अपनी पकड़ बनाए रखी और अपनी शाश्वत विरासत को प्राप्त करने के लिए पहुँचे, ज्येष्ठ पुत्र यीशु की विरासत को साझा किया। यह तथ्य कि उनके नाम स्वर्ग में अंकित हैं, नागरिकों के नामों को शहर की सूची में दर्ज करने की सामान्य प्रथा का सुझाव देता है। ये लोग जीवित परमेश्वर के शहर में नागरिक के रूप में नामांकित हैं और नागरिकों के अधिकारों में पूर्ण भागीदारी का आनंद लेते हैं जिसके लिए इस दुनिया में उनके प्रारंभिक अनुशासन के अनुभवों ने उन्हें तैयार किया है।

उदाहरण के लिए, जो विश्वास के लोग अब मर चुके हैं, वे खोज रहे थे, जैसा कि लेखक ने हमें इब्रानियों 11:13 से 16 में अब्राहम और कुलपतियों के बारे में बताया था, जो एक ऐसे शहर की तलाश कर रहे थे जिसकी नींव परमेश्वर की अपनी नींव पर हो, और जिसके लिए श्रोता अब खुद प्रशिक्षित हो रहे हैं, वह उनके सामने परमेश्वर के शहर, नए यरूशलेम की इस आकर्षक छवि में खड़ा है। परमेश्वर इस त्यौहार पर सभी के न्यायाधीश के रूप में मौजूद है, जो श्रोताओं को याद दिलाता है कि उनके जीवन के बारे में परमेश्वर का मूल्यांकन किसी भी अन्य प्रतिष्ठित न्यायालय, जैसे कि उनके पड़ोसियों के जीवन के मूल्यांकन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। सिद्ध धर्मी लोगों की आत्माएँ एक ऐसा वाक्यांश है जो इब्रानियों में पूर्णता या सिद्ध बनाने के अर्थ को स्पष्ट करने में मदद करता है।

ये धर्मी लोग इस मायने में सिद्ध हैं कि वे अंततः परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर चुके हैं, जहाँ मसीह अग्रदूत के रूप में गए थे। और पुराने नियम के विश्वासी लोग और नए नियम के विश्वासी लोग एक साथ सिद्ध होते हैं, जैसा कि हम इब्रानियों 11, 39 से 40 में पढ़ते हैं, क्योंकि सभी को एक साथ परमेश्वर के अडिग क्षेत्र और शहर में लाया जाता है। यहाँ श्रोताओं के सामने एक नई वाचा के मध्यस्थ, यीशु भी मौजूद हैं, जिनके पुरोहिती कार्य और छिड़कने के लहू की भेंट ने परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति में उनके प्रवेश को संभव बनाया।

ये चित्र धर्मोपदेश के केंद्रीय विवरण को याद दिलाएंगे। यहाँ यीशु के खून को हाबिल के खून से बेहतर शब्द बोलते हुए बताया गया है। यीशु का खून, बेशक, परमेश्वर द्वारा क्षमा और स्वीकृति का शब्द बोलता है, जबकि हाबिल के खून ने न्याय और प्रतिशोध की पुकार लगाई थी।

इब्रानियों 12:18 से 24 में यह बताया गया है कि यदि श्रोता मसीह में एक साथ अपने नए जीवन में दृढ़ बने रहें, तो उन्हें अवश्य ही लाभ होगा। यह सुविधा या लाभ के विषय पर एक अंतर्निहित अपील है, क्योंकि श्रोता इन वर्तमान लाभों को बनाए रखने के बारे में चिंतित होंगे और मूर्खतापूर्ण

कार्य करके, क्रोध के लिए ऐसे पक्ष का आदान-प्रदान नहीं करेंगे। निम्नलिखित खंड, इब्रानियों 12, श्लोक 25 से 29, स्पष्ट रूप से ऐसे विचार-विमर्श पर लौटेंगे।

लेखक एक ऐसी छवि प्रस्तुत करता है जो यह सुझाव देती है कि उनके आगे कुछ भी नहीं है जिससे उन्हें पीछे हटने की आवश्यकता है, क्योंकि उन्हें डर है कि कुछ लोग ऐसा करना जारी रख सकते हैं यदि वे केवल उन दबावों पर विचार करते हैं जो उनके पड़ोसियों ने उन पर डाले हैं। बल्कि, आगे स्वर्गीय शहर में यीशु, उनके मध्यस्थ, और सभी धर्मी लोगों की संगति में एक उल्लासपूर्ण उत्सव है जो अपने अंतिम घर में एक साथ लाए गए हैं, जो उन्हें पूर्णता की ओर अपने आगे के आंदोलन को जारी रखने के लिए प्रेरित करते हैं। सिनाई पर बोले गए शब्द और स्वर्ग से बेहतर शब्द के बीच के अंतर ने इब्रानियों 12, 25 में अंतिम चेतावनी भी स्थापित की है, अंतिम कम-से-अधिक तर्क, जो कि कम-से-अधिक तर्क से बहुत निकटता से मेल खाता है जिसने अध्याय 2, श्लोक 1 से 4 में धर्मोपदेश के पहले उपदेश को खोला। सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उससे इनकार कर दो जो तुमसे बात कर रहा है।

क्योंकि यदि वे लोग पृथ्वी पर चेतावनी देने वाले को अस्वीकार करके नहीं बच पाए, तो हम स्वर्ग से चेतावनी देने वाले को अस्वीकार करके क्यों न बचेंगे, जिसकी आवाज़ ने उस समय पृथ्वी को हिला दिया था, लेकिन अब यह वादा किया है, कि केवल एक बार और मैं केवल पृथ्वी को ही नहीं, बल्कि स्वर्ग को भी हिलाऊँगा। और यह केवल एक बार और उन अस्थिर चीजों को हटाने का संकेत देता है जो ऐसी चीजों के रूप में बनाई गई हैं ताकि अस्थिर चीजें बनी रहें। इसलिए, जैसा कि हम एक अस्थिर राज्य प्राप्त कर रहे हैं, आइए हम कृतज्ञता दिखाएं जिसके माध्यम से हम ईश्वर की आराधना इस तरह से करें जैसे कि वह श्रद्धा और भय के साथ प्रसन्न हो, क्योंकि हमारा ईश्वर वास्तव में भस्म करने वाली आग है।

धरती पर उन्हें चेतावनी देने वाले को मूसा के रूप में सुना जा सकता था, जो सिनाई वाचा का प्रवक्ता था, अगर यह तुरंत बाद की आयत न होती, जो यह सुझाव देती है कि दोनों चेतावनियों का स्रोत ईश्वर है। कहा जाता है कि ईश्वर की आवाज़ ने सिनाई में धरती को हिला दिया था। उस समय ईश्वर की आवाज़ ने धरती को हिला दिया था।

न्यायियों 5, श्लोक 4 से 5, और भजन 67, श्लोक 8 में, परमेश्वर की आवाज़ के जवाब में भूकंप सिनाई में उस घटना की याद का हिस्सा है। लेखक अब हागै, अध्याय 2, श्लोक 6 को पृथ्वी और आकाश दोनों के निर्णायक रूप से हिलने और हटने के बारे में बताने के लिए दिव्य भविष्यवाणी के रूप में पेश करता है। फिर भी, मैं एक बार के लिए आकाश और पृथ्वी को हिला दूँगा।

लेखक ने इस हागै पाठ को संशोधित किया है ताकि इस भविष्य के झटकों में पृथ्वी के साथ स्वर्ग को भी शामिल करने पर जोर दिया जा सके। इसलिए, लेखक न केवल अपने उद्धरण में शब्दों को जोड़ता है बल्कि स्वर्ग और पृथ्वी के क्रम को भी उलट देता है ताकि विरोधाभास अधिक स्पष्ट हो और स्वर्ग का हिलना अधिक प्रमुख और चरमोत्कर्षपूर्ण हो। पाठ के शुरुआती दो शब्द, ग्रीक में शब्द एती हापैक्स, अंग्रेजी में तीन शब्द केवल एक बार और, इस श्लोक की इस व्याख्या की कुंजी प्रदान करते हैं।

चूँकि परमेश्वर पृथ्वी और आकाश को एक बार के लिए हिला देगा, न कि केवल फिर से, इसलिए लेखक इसे दृश्यमान सृष्टि, पृथ्वी और दृश्यमान आकाश दोनों के निर्णायक युगांतिक झटकों और हटाने के वादे के रूप में पढ़ता है। यहाँ कोई व्यक्ति लेखक द्वारा दृश्यमान भौतिक क्षेत्र की अस्थायी प्रकृति और परमेश्वर और परमेश्वर के क्षेत्र की शाश्वत प्रकृति के बीच के अंतर को याद कर सकता है, जिसे अध्याय 1, श्लोक 10 से 12 में पहले ही पेश किया गया है। सभी निर्मित और हिलने वाली चीजें हटा दी जाएँगी ताकि जो अस्थिर है और केवल वही बची रहे।

लेखक की विशिष्ट परलोक विद्या यहाँ फिर से उभर कर आती है। स्वर्ग और पृथ्वी का नवीनीकरण नहीं होता, न ही आने वाला युग वर्तमान युग के बीत जाने के बाद शुरू होता है। बल्कि, परमेश्वर का राज्य पहले से ही भौतिक और दृश्यमान सृष्टि से परे मौजूद है, और यह केवल वह सब होगा जो अस्थायी द्वितीयक निर्मित व्यवस्था के हटने के बाद बचा रहेगा।

ईसाई समुदाय का हिस्सा बने रहना और बने रहना अपने आप में जीवित रहने के लिए आवश्यक है, शायद यही एक कारण है कि लेखक मोक्ष की कल्पना उस रूप में करता है जिसे विश्वासी अध्याय 1, पद 14 में उस उपहार के रूप में प्राप्त करने वाला है जो इब्रानियों 9 पद 28 में मसीह के दूसरे प्रकट होने पर ही पूरी तरह से प्राप्त होता है। भौतिक दुनिया से मुक्ति जो विघटन के लिए निर्धारित है और स्थायी क्षेत्र में प्रवेश जो अकेले हिलने से बच जाता है, वह मुक्ति है, मोक्ष है जो अंतिम विश्लेषण में इस लेखक के लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है। हिलाए जाने वाली चीजों को हटाना पहले कक्ष को हटाने के अनुरूप है, जो पवित्र स्थान तक पहुंच को अवरुद्ध करता है; अगर हम यहां अध्याय 9, पद 9 और 10 में तम्बू के भौतिक लेआउट के बारे में लेखक की चर्चा को याद करें।

इस युगांतिक झटकों और दृश्यमान आकाश के हटने के बाद, दिव्य पवित्र स्थान में जाने का रास्ता स्पष्ट हो जाएगा, और बेटों के ग्राहक, कई बेटे और बेटियाँ, प्रवेश करेंगे। यह अपेक्षा लेखक द्वारा सांसारिक संपत्ति, सांसारिक नागरिकता और सांसारिक स्थिति के निरंतर अवमूल्यन को रेखांकित करती है। ऐसी सभी चीजें ईश्वर के वादे के अनुसार समाप्त हो जाती हैं, और ईश्वर के दायरे में केवल आस्तिक की बेहतर संपत्ति ही बची रहेगी।

ईश्वर द्वारा आस्थावान लोगों को इतना शानदार उपहार प्रदान करने की इच्छा के प्रति एकमात्र उचित प्रतिक्रिया कृतज्ञता दिखाना है। यहाँ ग्रीक शब्द इकोमेन है चारेन । चारिस से चारेन , जिसे हम अनुग्रह के रूप में अनुवादित करते हैं, यहाँ कृतज्ञता को दर्शाता है क्योंकि लेखक इस उपदेश को एक उपहार प्राप्त करने के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है, अर्थात् अडिग साम्राज्य।

कृतज्ञता और कृतज्ञता में दृढ़ता का आह्वान इब्रानियों में लेखक के तर्क और उपदेश का सार है। ईश्वर द्वारा प्रदान किए जा रहे लाभों की विशालता, एक शाश्वत मातृभूमि जिसमें लाभार्थियों को नागरिक के रूप में नामांकित किया जाएगा, कृतज्ञतापूर्वक जीवन जीने के लिए आनुपातिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। यह कृतज्ञता ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीकों से ईश्वर की भक्ति और श्रद्धापूर्ण भय के साथ पूजा करने के माध्यम से खुद को व्यक्त करेगी।

यूअरेस्ट , यहाँ यूअरेस्टोस , अच्छी तरह से प्रसन्नतापूर्वक स्टेम पर निर्मित एक और शब्द पाते हैं । यह एक शब्द समूह था जिसे इब्रानियों 11 आयत 5 और 6 में पेश किया गया था जहाँ पिस्टिस , दृढ़ विश्वास या आस्था, को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए पूर्वापेक्षा माना गया था। और यही शब्द बाद में अध्याय 13 आयत 16 से 21 में वापस आएगा।

12:28 और अध्याय 13 के बाद के छंदों के बीच का वह मौखिक संबंध संकेत देता है कि 13 1 से 21 तक एक तस्वीर विकसित होगी कि ईश्वर के प्रति कृतज्ञता रोजमर्रा की गतिविधियों के संदर्भ में कैसी दिखती है, एक दूसरे के साथ साझा करने और विश्वास करने वाले समुदाय में एक दूसरे के लिए अच्छा करने और उस पारस्परिक सहायता में शामिल होने के लिए जो समाज के हमलों का प्रतिरोध संभव बनाता है और जो ईश्वर की कृपा को भी स्वीकार करता है। श्रोताओं को आभारी होने का आग्रह करके, लेखक उन्हें याद दिलाता है कि उन्होंने जो पाया है वह उससे कहीं अधिक है जो उन्होंने खो दिया है। शायद जो लोग अपने विश्वास में डगमगा रहे हैं वे पराजित महसूस करते हैं।

वे अपने द्वारा झेले गए नुकसान और उस नुकसान की दैनिक यादों से दिल से दुखी हैं। इस पूरे उपदेश में, लेखक ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि विश्वासियों के पास क्या है, उन्होंने बेटे के साथ अपने संबंध के माध्यम से क्या हासिल किया है, लाभ इतने बड़े हैं कि तुलना में नुकसान महत्वहीन हैं। इब्रानियों 12 29 ने भस्म करने वाली आग के रूप में भगवान की एक उपयुक्त छवि के साथ पैराग्राफ को पूरा किया, एक छवि जो व्यवस्थाविवरण 4 श्लोक 24 से ली गई है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि आपका भगवान एक भस्म करने वाली आग है।

यह छवि 12:25 की चेतावनी को पुष्ट करती है और अध्याय 10, श्लोक 26 से 31 की चेतावनी को भी याद दिलाती है, जहाँ कृतघ्न को विरोधियों को भस्म करने के लिए तैयार आग की संभावना का सामना करना पड़ता है। इब्रानियों 12 श्लोक 28 से 29, संक्षेप में, पूरे उपदेश में लेखक की देहाती तकनीक को दोहराता है जिसका उपयोग उसने परमेश्वर को श्रद्धापूर्वक और पवित्र सेवा प्रदान करने के लिए अपने आदेश को पुष्ट करने के लिए किया और इस प्रकार परमेश्वर को वह कृतज्ञता दिखाने के लिए किया जिसके वह हकदार है, अर्थात् एक ओर उसकी उदारता की विशालता के विचार के लिए और दूसरी ओर उसके और उसके उपहारों के प्रति अन्यायपूर्ण प्रतिक्रिया करने वालों पर उसके न्याय के खतरे के विचार के लिए। लेखक इब्रानियों 12 4 से 29 में कई महत्वपूर्ण तरीकों से श्रोताओं के लिए अपने अलंकारिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाता है, एथलेटिक प्रतियोगिता के व्याख्यात्मक लेंस को पूरक करता है जिसे उसने 12 1 से 3 में अपने अनुभवों के बारे में सोचने के लिए एक रूपरेखा के रूप में पेश किया था। लेखक परमेश्वर के रचनात्मक अनुशासन के व्याख्यात्मक लेंस को जोड़ता है, कठिन अनुभवों और कठिनाइयों को परमेश्वर के परिवार में सम्मानपूर्वक गोद लेने के प्रमाण और चरित्र निर्माण के अवसरों में बदल देता है।

इस दृष्टिकोण के साथ, लेखक श्रोताओं को उन अनुभवों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है, जो एक सम्मानजनक मार्ग है, न कि एक दुर्बल करने वाले मार्ग का। वे यह देखना शुरू करते हैं कि कठिनाई के उनके अनुभव समाज द्वारा उन्हें शर्मिंदा करने से ज़्यादा उन्हें आकार देने वाले ईश्वर को प्रकट करते हैं। लेखक द्वारा विकसित स्वर्गीय यरूशलेम का दर्शन श्रोताओं के लिए

एक आकर्षक निमंत्रण है कि वे यीशु के प्रति वफ़ादारी के मार्ग पर एक साथ आगे बढ़ते रहें और उसके करीब आते रहें।

अंत में, उनके सामने डरने की कोई बात नहीं है, बल्कि उनके शाश्वत उत्तराधिकार में केवल एक उत्सवपूर्ण स्वागत है। अपनी अंतिम चेतावनी और उस चेतावनी के लिए ब्रह्मांड संबंधी तर्क के साथ, लेखक फिर से श्रोताओं की आँखों के सामने बहुत ही स्पष्ट रूप से रखता है कि वह क्या मानता है कि यह एक व्यापक चुनौती है जिसके लिए श्रोताओं को खुद को तैयार करना है और जिसे पूरा करने में श्रोताओं को विफल नहीं होना चाहिए। यह एक असमर्थित समाज में इस जीवन के बाकी हिस्सों के लिए साथ चलते रहने की चुनौती नहीं है, बल्कि यह स्वर्ग और पृथ्वी के अंतिम झटकों का सामना करने और उनसे बचने की चुनौती है ताकि कोई अस्थायी ब्रह्मांड के भाग्य में हिस्सा न ले, बल्कि उस शाश्वत घर में प्रवेश करे जिसे भगवान ने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो खुद को वफादार दिखाते हैं।

इस अध्याय के अंत में, लेखक ने कृतज्ञता के लिए अपने आह्वान पर स्पष्ट रूप से वापसी की है, वह मूल मूल्य जो उसके उपदेशों और श्रोताओं को दी गई चेतावनियों के बहुमत को एक साथ रखता है, जो उन्हें यह प्रभावित करने की कोशिश करता है कि ईश्वर के प्रति कृतज्ञतापूर्ण प्रतिक्रिया हर परिस्थिति में उनके विचार-विमर्श का मार्गदर्शन करनी चाहिए जिसमें वे खुद को पाते हैं। जैसा कि हम इस अध्याय को अपने स्वयं के शिष्यत्व और हमारे विश्वास के समुदायों के गठन में कैसे उपयुक्त बनाते हैं, इस पर विचार करते हैं, हमें उन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें इब्रानियों 12:5 से 11 की सामग्री की आधुनिक विद्वानों और व्याख्याकारों द्वारा आलोचना की गई है। कुछ लोग इस अंश को ईश्वर द्वारा स्वीकृत अपमानजनक पालन-पोषण या घरेलू हिंसा के वारंट के रूप में प्रस्तुत करते हैं या वे पीड़ा को उचित दंड के रूप में व्याख्या करने के लिए इसकी आलोचना करते हैं।

यह सब बातें लेखक द्वारा पढ़ी गई नीतिवचन की पुस्तक के बारे में तो सच हो सकती हैं, लेकिन इस अंश में लेखक द्वारा उस पुस्तक के अपने प्रयोग के बारे में यह सब कुछ सच नहीं है। इब्रानियों के लेखक ने नीतिवचन की पुस्तक के उन पहलुओं को दबा दिया है जो दंडात्मक अनुशासन की बात करते हैं, इसके बजाय वह रचनात्मक अनुशासन की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। वह यह भी नहीं कहते कि श्रोताओं द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयाँ उनकी अपनी गलती हैं।

ये कठिनाइयाँ पापियों या उन लोगों की शत्रुता का परिणाम हैं जो ईश्वर के विरोधी हैं और ईश्वर की इच्छा के आगे खुद को समर्पित नहीं करते। इस अंश की व्याख्या और अनुप्रयोग दोनों के लिए यह समझना आवश्यक है कि लेखक के मन में क्या पीड़ाएँ हैं। वह बीमारी या बीमारी या घरेलू दुर्व्यवहार या गरीबी या दमनकारी शासन के अधीनता की बात नहीं कर रहा है।

वह विशेष रूप से निंदा, अपमान, दुर्व्यवहार और वंचना के बारे में बात कर रहे हैं जो विश्वासियों द्वारा यीशु और ईश्वर के लोगों के साथ उनके जुड़ाव के परिणामस्वरूप और ईश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार और आज्ञाकारी बने रहने की उनकी प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप सहा गया और स्वेच्छा से सहन किया गया। लेखक के मूल पादरी संदर्भ के बाहर इस अंश को लागू करने का

प्रयास करना समस्याग्रस्त है। यह अंश प्रोत्साहन प्रदान करता है, विशेष रूप से दमनकारी परिस्थितियों में सताए गए चर्च को, जहाँ विश्वास की स्वीकारोक्ति, हम एक ईसाई समूह के साथ एकत्र हो रहे हैं, और हम ईश्वर की आज्ञाओं और सुसमाचार की माँगों के अनुसार अपने जीवन को आकार दे रहे हैं, जो लोगों को उनके मेजबान समाज के साथ संघर्ष में लाते हैं।

यह एक ऐसी सेटिंग है जो लेखक द्वारा संबोधित सेटिंग से बहुत मिलती-जुलती है और इसलिए लेखक द्वारा रचनात्मक अनुशासन की इस छवि के साथ व्याख्या की गई है। यह निश्चित रूप से, किसी भी सेटिंग में ईसाइयों के लिए एक प्रोत्साहन है जब भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने का अर्थ है आत्म-त्याग करना और परमेश्वर के प्रति वफ़ादार आज्ञाकारिता के लिए कठिनाइयों और कष्टों को गले लगाना। इब्रानियों 12, आयत 12 से 17 में, लेखक हमें विश्वास में एक दूसरे के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियों की एक और याद दिलाता है।

वह हमें फिर से बुलाता है कि हम अपने समाज के निजीकरण या धर्म के व्यक्तिगतकरण द्वारा हम पर लगाए गए प्रतिबंधों को पार करें और इसके बजाय यह पता लगाना जारी रखें कि कैसे अपने भाइयों और बहनों को यह सुनिश्चित करने में निवेश करें कि वे ईश्वर के उपहारों से वंचित न हों, जबकि हम उन्हें हमें ट्रैक पर बने रहने और आगे बढ़ने में मदद करने की अनुमति देते हैं। एसाव का उदाहरण हमें कई संदर्भों में चुनौती देता है जिसमें हम खुद को जीवित ईश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में अपने जन्मसिद्ध अधिकार का व्यापार करते हुए पा सकते हैं जो आनुपातिक रूप से एक भोजन है। एसाव का उदाहरण शत्रुतापूर्ण या दमनकारी देशों में ईसाइयों का सीधे तौर पर सामना करता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे लेखक ने अपने श्रोताओं का सामना किया था, उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कि जीवन के दशकों और आराम भी ईश्वर के प्रति समर्पित आज्ञाकारिता की अखंडता को बनाए रखने की तुलना में कुछ भी नहीं हैं।

इस प्रकार, बहुत गंभीर दमन के सामने झुकना, एक भोजन के बराबर के लिए अपने जन्मसिद्ध अधिकार को बेचने के समान है। हालांकि, एसाव का उदाहरण पश्चिमी देशों के ईसाइयों का भी सामना करता है, जहाँ ईसाई धर्म को काफी हद तक एक हानिरहित, निजी और मौलिक रूप से अप्रासंगिक धर्म बनने के लिए वश में कर लिया गया है, जिसे सुरक्षित रूप से सहन किया जा सकता है क्योंकि यह हमेशा की तरह व्यापार में हस्तक्षेप नहीं करता है। लेखक हमें यह पूछने की चुनौती देता है कि क्या हमने घरेलू शिष्यत्व खरीदकर अपना जन्मसिद्ध अधिकार बेच दिया है। क्या हमने एक ऐसे ईश्वर को गढ़ा है जो हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है, बजाय इसके कि हम उस ईश्वर की तलाश करें जो हमें उसकी सेवा करने के लिए बुलाता है और हमारे समुदाय, हमारे राष्ट्र और दुनिया के लिए उसका दृष्टिकोण है? क्या हमने एक उद्धारकर्ता को गढ़ा है जो हमसे प्यार करता है और हमारी देखभाल करता है, लेकिन हमें अपने लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की अनुमति देने से संतुष्ट है, बजाय इसके कि हम उसके लक्ष्यों की सेवा करने के लिए हमें बुलाएँ? एसाव का उदाहरण हमें यह पूछने की चुनौती देता है कि कितनी बार हमारे चुनाव ईश्वर के प्रति हमारी भूख, ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम, इस दुनिया में ईश्वर के साधन बनने की हमारी इच्छाओं को दर्शाते हैं, और कितनी बार हमारे चुनाव इस दुनिया के तुच्छ मनोरंजन और गतिविधियों के लिए हमारी प्राथमिकता को दर्शाते हैं। अंत में, इस अध्याय के अंत में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता की प्रतिक्रिया को लेखक द्वारा उभारना हमें सुझाव देता है कि कृतज्ञता एक ऐसा मूल मूल्य है जो हमारे जीवन में एकीकरण लाने की क्षमता रखता है।

लेखक इस उपदेश में काफी ऊर्जा लगाता है ताकि हमें इस बात का एहसास हो कि हमें ईश्वर से क्या मिला है, हमारे अधिकार की भावना, हमारी धारणा कि हमने जो कुछ भी पाया है वह हमने कमाया है, इस दुनिया की वस्तुओं या मनोरंजन या विकर्षणों की हमारी अतृप्त इच्छा को इस समझ से बदल देता है कि ईश्वर ने हमें कितना अनुग्रहित, अनुग्रहित और समृद्ध किया है। और वह हमें ईश्वर की उदारता के लिए उचित प्रतिफल देने में एकनिष्ठ होकर खुद को निवेश करने के लिए प्रेरित करता है। गवाही, आज्ञाकारिता, सेवा, उन लोगों की देखभाल करना जिनकी देखभाल ईश्वर चाहता है, ईश्वर के आभारी ग्राहकों के रूप में ईश्वर की ओर से ईश्वर की पहुँच का विस्तार करना, हमारे महान संरक्षक के हितों को सम्मान दिलाने और उनकी सेवा करने के किसी भी अवसर की तलाश करना।

ये चीजें एक एजेंडा बनाती हैं जो हमारे जीवन के हर हिस्से में ईमानदारी लाती है, और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता दिखाने की प्रतिबद्धता वह मुख्य मूल्य बन जाती है जिसे हम हर परिस्थिति में अपनाना चाहते हैं। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वह हमसे कम का हकदार नहीं है और जैसा कि लेखक हमें याद दिलाता है क्योंकि हमारा ईश्वर वास्तव में एक भस्म करने वाली आग है। लेखक हमें चुनौती देता है कि हम गैर-बाइबिल दृष्टिकोण को अलग रखें कि मोक्ष एक बिना किसी शर्त वाला उपहार है जिसका हम अपने जीवन के दौरान अपने हितों का पीछा करते हुए आनंद ले सकते हैं और इसके बजाय बाइबिल के दृष्टिकोण को अपनाएं कि मोक्ष ईश्वर की कृपा और परोपकार और मेरी प्रतिक्रियाशीलता के बीच चल रहे नृत्य का अंतिम परिणाम है, ईश्वर के उपहारों का सम्मान करना जैसा कि ईश्वर का हकदार है और खुद को ईश्वर के हितों के लिए समर्पित करना जैसा कि ईश्वर ने खुद को मेरे लिए दिया है।

परमेश्वर जिसने हमें हमारा जीवन, हमारी सम्पत्ति, और हमारी अनन्त आशा दी है और उद्धारकर्ता जो सबके लिए मरा और उनके लिए जी उठा, हमारे धन्यवाद की पूर्ण अभिव्यक्ति का हकदार है, क्योंकि हम अपने जीवन को अब अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु के लिए जीने के लिए समर्पित करते हैं, जो हमारे लिए मरा और जी उठा, जिसे पौलुस स्वयं 2 कुरिन्थियों 5 पद 15 में हमारे लिए मरने में यीशु के उद्देश्य के रूप में पहचानता है।